हिंदी की उपभाषाएँ और उसकी बोलियाँ

- भौगोलिक विस्तार- राजस्थान,मध्य प्रदेश,उत्तर प्रदेश, बिहार,दिल्ली,हिमांचल प्रदेश,हरियाणा, उत्तराचंल की मुख्य भाषा तथा पंजाब नेपाल, हैदराबाद पुरे भारत तक बोली तथा समझी जाती है।

हिंदी की उपभाषाएँ बोलियाँ

- राजस्थानीः- 1.मारवाडी 2.जयपुरी 3.मेवाती 4.मालवी
- पश्चिमी हिंदीः- 1.ब्रज 2.बुन्देली 3.कन्नोजी 4.खडीबोली 5.हरियाणवी 6.दक्खिनी हिंदी
- पूर्वी हिंदीः- 1.अवधी 2.बघेली 3.छत्तीस गढी
- बिहारीः- 1.भोजपुरी 2.मगही 3.मैथिली
- पहाडीः- 1.गढवाली 2.कुमायूँनी 3.नेपाली

हिंदी की उपभाषाएँ और बोलियाँ

राजस्थानी पश्चिमी हिंदी पूर्वी हिंदी बिहारी पहाड़ी

1.मारवाडी 2.जयपुरी 3.मेवाती 4.मालवी

1.ब्रज 2.बुन्देली 3.कन्नोजी 4.खडीबोली 5.हरियाणवी 6.दक्खिनी हिंदी

1.अवधी 2.बधेली 3.छत्तीस गढी

1.भोजपुरी 2.मगही 3.मैथिली

1.गढवाली 2.कुमायूँनी 3.नेपाली

राजस्थानी हिंदी:-

1.मारवाडी-मरुभूमि मरुधर देश को मारवाड़ कहते हैं।यहाँ की भाषा मारवाड़ी।शुद्ध रूप जोधपुर का आसपास 12 उपबोलियाँ-बीकानेरी,शेखावाटी,मेवाडी प्रमुख बोलने वालों की दृष्टि से सबसे बडी 1.करोड के आसपास।साहित्य अधिक नहीं, प्राचीन राजस्थानी को डिंगल कहते हैं मूलतः मारवाडी है। चन्दवरदायी, बाँकीदीस,मुरारीदास जैसे कवि। रासों ग्रंथों,ढोला-मारू रा दोहा जैसी रचनाएँ।

2.मालवी-मालवा की बोली.उज्जैन के आसपास का क्षेत्र प्राचीन काल में मालव कहा जाता था।
मालवी का शुद्ध रूप देवास,इन्दोर और उज्जैन में बुन्देली का प्रभाव।मालवी और मारवाड़ी के बीच की। साहित्य में संतो महात्माओं की वाणी के रूप में तथा लोक-साहित्य मिलता है।

जयपुरी-ढूँढाँढ़ी भी कहते हैं जो क्षेत्र के आधार पर पड़ा।17वीं शती के बाद जयपुर बसने के बाद इसे जयपुरी कहा गया। हाड़ौती इसकी प्रमुख बोली जो कोटा और बूँदी में बोली जाती है।साहित्य नहीं है।प्रचीन डिंगल में ही इसका रूप

मेवाती-मेवात का नाम मेवो जाति के कारण और मेवात की बोली होने के कारण इसे मेवाती कहा गया। अलवर, भरतपुर,गुड़गाँव के दक्षिण-पूर्व तक क्षेत्र। साहित्य नहीं,लोक-साहित्यल ही मिलता है।

पश्चिमी हिंदी

- 1.ब्रज 2.बुन्देली 3.कन्नोजी 4.खडी बोली 5.हरियाणवी 6.दक्खिनी हिंदी

ब्रज-ब्रज का अर्थ होता है चलना। प्राचीन काल में ब्रज क्षेत्र के लोग गोचरण करते थे।इन गोपालकों की भाषा को ब्रज कहा

- मथुरा, आगरा, अलीगढ़ के क्षेत्र की मुख्य भाषा।

- सन् 1971 की जनगणना के आधार पर बोलने वालों की संख्या 2.05करोड़ के लगभग
- साहित्य समृद्ध, गुजरात से बंगाल तक इसी भाषा में.
- कृष्णभक्ति काव्य की भाषा
- सूर तथा अष्टछाप के कवियों के अलावा मीरा,रहीम,रसखान बिहार,देव,पद्माकर,मतिराम,भारतेन्दु और रत्नाकर आदि ने।
- माधुर्य एवं समासोक्ति की दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट ।
- ए का ऐ और ओ का औ कर दिया जाता है।ऊधो का ऊधौ,पाया का पायौ आदि उसके उदा.

खड़ी बोली:खड़ी का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1800 में लल्लूलाल ने किया

- राहुल सांकृत्यायन ने इसे कौरवी नाम दिया।
- प्राचीन कुरु जनपद की बोली के आधार पर कौरवी कहा गया।
- सहारनपुर,मुजफ्फरनगर,दिल्ली, मेरठ, देहरादून का मैदानी भाग मुख्य
- विगत 100 वर्षों में इस भाषा का आश्चर्यजनक ढंग से विकास
- साहित्य का दृष्टि से समृद्ध कदाचित् अन्य किसी भाषा में इतना नहीं।

साहित्य की प्रत्येक विधा काव्य, उपन्यास, कहानी,नाटक, निबंध पत्र-पत्रिकाएँ आदि की अभिव्यक्ति का माध्यम रही।

बुन्देलीः-बुंदेला राजपूतो का प्रदेश होने के कारण इसे बुंदेलखंण्ड कहा गया और य़हाँ की भाषा को बुंदेली कहा गया।

- ग्रियर्सन ने इसे बुंदेलखंण्डी कहा। अन्य नाम दार्शणी भी।
- उत्तर प्रदेश के बाँदा,हमीरपुर उरई,जालौन,झासी,मध्य प्रदेश के
- ग्वालीयर का पूर्वी भाग, भोपाल का कुछ भाग,होसंगाबाद क्षेत्र
- ब्रज भाषा का आधिपत्य
- एतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व
- रानी लक्ष्मीबाई,तुलसीदास की जन्मभूमि।
- लोक-साहित्य की दृष्टि से संम्पन्न
-